शोध पत्र

पृथक विदर्भ की मांग और ब्रजलालजी बियाणी

* डॉ. विभा देशपांडे

' कला व विज्ञान महाविद्यालय, कु-हा

प्रस्तावना

विदर्भ पृथक प्रांत की स्थापना की यह मांग नई नहींथी। उसके पीछे एक इतिहास है स्व दादा सहाब खापर्डे और राव बहादुर मधोलकर इन्होंने मराठी भाग को हिन्दी भाग के साथ रखने के सरकार की कार्यवाही के प्रति असंतोष प्रकट किया था, 1918 में अंग्रेजी राज्यमें बनाई गई भारतीय राज्य सुधार समिती ने सर्वप्रथम भाषा और संस्कृति के आधार पर गठन की बात कही। तत्पश्चात 1920 में अखिल भारतीय कॉंग्रेस ने भी भाषावर प्रांत बनाने की योजना केलिए आवाज उठाई। 1924 में सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव एसेम्बली में मा. श्री.अणेने भाषावार प्रांत बानाने को कहा। उपरोक्त कार्यवाही के अलावा और एक, पृथक विदर्भ के लड़ाई के लिये महत्वपूर्ण टप्पा, याने । "अक्टूबर 1938 को मध्यप्रांत और बरार प्रांतिय विधि मंडल द्वार किया गयाप्रस्ताव", इसके द्वारा विदर्भ को नया प्रान्त बनाने के लिये सिफारिश की गई थी। इस प्रस्ताव में कहा गया थाकि ये विधि मंडल प्रांतिय सरकार को सिफारिश करती है कि, इस प्रांत का मराठी भूभाग मिलकर विदर्भ इस नाम का एक नया गव्हर्नर का प्रांत निर्माण करने के लिये, जितने जल्दी हो सके उपाय योजना की जाये।

विदर्भ के प्रश्न को लेकर 22 अक्तूबर 1948 को 'महाविदर्भ परिषद' का निर्माण किया गया। अकोला करार, नागपूर करार किया गया । परंतु इस पवित्र करार को आज तक लागू नहीं किया गया। हमारे विदर्भ के नेता ब्रजलाल बियाणी ने पृथक विदर्भ की मांग के लिये काफी प्रयत्न किये उनके अनुसार महाविदर्भ अलग मांगने का महाविदर्भ की जनता को अधिकार है। बियाणी की द्वारा महाविदर्भ परिषद की जगह – जगह सभाएँ व सम्मेलन लिये गये इस मांग के समर्थन में आचार्य विनोबा भावे ने भी सहमति दी। 4/5/1949 को बियाणी जी के नेतृत्व में परिषद ली गई। 25/5/1949 को लोणार में ली गई इन दिनों ही परिषद में महाविदर्भ का प्रस्ताव एकमत से मंजूर किया गया। उस समय भी विदर्भ के समर्थन और विरोध, ऐसे दो पक्ष विदर्भ की राजनीति में पड़ गए। उन पर तत्कालीन नेताओं ने काफी आरोप भी लगाये कहा गया कि बियाणी ये हिन्दी □ाषी है, फिर उनको अलग विदर्भ क्यों चाहिये ? विशेष यह की ब्रजलालजी के नेतृत्व में ही तैयार हुयें नेताओं द्वारा उन पर यह आरोप रखें गये और उनका साथ छोड़ दिया। इस संबंध में जनता का कौल लेकर पूछा गया कि बियाणीजी की पृथक विदर्भ की मांग को पूरी न हो सकी तो 73.34 लोगों का कहना हैं कि विदर्भ के नेताओं में आपसी संघर्ष के कारण, भाषावाद, जातिवाद के राजनीति के कारण और यह मांग हिंदी भाषी व्यक्ति द्वारा उठाई गई थी साथ ही मराठा समाज और पश्चिमी महाराष्ट्र का राजनीति पर प्रभाव होने के कारण यह मांग पूरी न हो सकी। विदर्भ में जातीय राजनीति के कारण और नेताओं में आपसी संघर्ष के कारण यह मांग पूरी न हो सकी।

वर्तमान में फिर पृथक विदर्भ की मांग चालू ही है, आज हमारे सामने यह सवाल उठता है कि क्या पृथक विदर्भ निर्माण हो सकेगा? यह एक विचारार्थ प्रश्न हैं। क्योंकि संशोध ान करते समय मुलाकात के दौरान लोगों से प्रश्न पूछा की क्या बियाणी जी के स्वप्न की पूर्ति (पृथक विदर्भ) वर्तमान राजकीय स्थिती में हो सकती है? तो 60 लोगों ने इसके जवाब में कहा कि नहीं हो सकती क्यों कि विदर्भ की राजनीति में पश्चिमी महाराष्ट्र के नेताओं का ज्यादा प्रभाव है, वर्तमान विदर्भ नेताओं द्वारा भी पुनः पृथक विदर्भ की मांग की जा रही है।परंतु विदर्भ के नेता जातिवाद, भाषावाद की राजनीति के कारण आज भी एकत्रित होकर इसके लिये माँग नहीं करते, निर्वाचन के समय कहते हैं, लेकिन जीतने के बाद इस बात की तरफ ध यान नहीं देते, छत्तीसगढ़, झारखंड प्रांत हो सकता हैं तो विदर्भ क्यों नहीं? आज पृथक विदर्भ की मांग आगे आयी तो स्व– ब्रजलाल जी की याद आये बिना नहीं रही, हम सभी लोग यदि मिलकर सतत प्रयत्न करें तो यह मांग पुरी होगी।

वर्तमान समय में भी पृथक विदर्भ की मांग जोर – शोर से चालू हैं। विविध समाचार पत्रों द्वारा इस संदर्भ में जनमत का कौल लिया गया, इसके लिये चर्चा सत्र, मतदान इत्यादि लिया गया, उसमें यह निष्कर्ष निकला की छोटे – छोटे राज्य

यदि निर्माण किये गये तो विकास अच्छी तरह से हो सकता है, इसका उत्तम उदाहरण अमेरिका है। परंतु नेताओं की राजनीति के कारण यह नहीं हो पा रहा है। राजनीति विरहित जनसमर्थन मिलना अत्यंत आवश्यक है। सर्वांगीण विकास हेतु विदर्भ राज्य निर्माण होना आवश्यक है। तो इसके विपरीत कुछ लोगों का कहना है कि छोटे – छोटे राज्य निर्माण करने की आवश्यकता नहीं, विदर्भ का विकास यहाँ के नेतृत्व ठीक न होने के कारण खुंट गया है। ऐसा शिवसेना उपजिला प्रमुख शांतराम जगताप, महाराष्ट्र नव निर्माण सेना के जिल्हाध्यक्ष श्री संजय गायकवाड इत्यादि ने कहाँ इन्होंने पृथक विदर्भ का विरोध किया है, इनके मतानुसार संयुक्त महाराष्ट्र आवश्यक है, क्योंकि छोटे राज्यों पर कर्ज का बोझा बढ़ जाता है। इस तरह पृथक विदर्भ पर चर्चा, विचार विमर्श से यह निष्कर्ष निकला की बहुतांश लोगों का कहना है कि पृथक विदर्भ आवश्यक है। युवा नेतृत्व ने ये प्रश्न जन आंदोलन के माध्यम से निरंतर उठाया तो ही पृथक विदर्भ राज्य संभव है।

संदर्भ ग्रंथ

1) मातृभूमी समाचार पत्र सम्पा. – प्रमिलाताई ओक दि. 13/10/1939
2) मातृभूमी समाचार पत्र सम्पा. – श्री शिवचन्द्र वी नागर दि. 13/10/1953
3) काळ्या मातीचे बोल – गेडाम शंकरराव, मयंक प्रकाशन नागपूर, संस्करण प्रथम,1994, पृ. क्र. 7.
4) तरुण भारत समाचार पत्र – 14 अगस्त 2013.